असतोमा सदगमय

भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

आधुनिक भारतीय युवा और सांस्कृतिक विरासत से दूरियां

25-26 अक्टूबर 2024

प्रायोजक

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR), नई दिल्ली

Hybrid Mode

आयोजक

हिन्दी विभाग

हर्ष विद्या मन्दिर पी.जी. कॉलेज

रायसी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

मुख्य संरक्षक

डॉ. के.पी. सिंह
अध्यक्ष - प्रबन्ध समिति

डॉ. प्रभावती
उपाध्यक्ष - प्रबन्ध समिति

संरक्षक

डॉ. हर्ष कुमार दौलत
सचिव - प्रबन्ध समिति

श्री निशान्त कुमार
कोषाध्यक्ष - प्रबन्ध समिति

संगोष्ठी निदेशक

प्रो. (डॉ.) राजेश चन्द्र पालीवाल
प्राचार्य

संयोजक

डॉ. विक्रम सिंह
विभागाध्यक्ष - हिन्दी

सह -संयोजक

डॉ. मीनू देवी
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

डॉ. वन्दना
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

आयोजन समिति

डॉ. अजीत कुमार राव
डॉ. पूनम चौधरी
डॉ. रणवीर सिंह
डॉ. प्रशान्त कुमार
डॉ. मनोज कुमार
डॉ. अतुल कुमार दुबे
डॉ. विनीता भार्गव
डॉ. सरला भारद्वाज
डॉ. स्मृति कुकशाल

तकनीकी समिति

डॉ. राहुल कौशिक
डॉ. विकास तायल
डॉ. निशा पाल
श्री अक्षय गौतम
श्री ललित मोहन सैनी

मीडिया समिति

डॉ. वर्षा अग्रवाल
डॉ. के.पी. तोमर
डॉ. प्रदीप कुमार
डॉ. मुरली सिंह
डॉ. विनीता दहिया

आयोजक मण्डल

डॉ. दीपिका भट्ट
डॉ. सारिका माहेश्वरी
डॉ. प्रीति गुप्ता
डॉ. अनुज कण्डवाल
डॉ. रश्मि नौटियाल
डॉ. नीटू राम
डॉ. दुर्गा रजक
श्रीमती प्रिया प्रधान
डॉ. हेमन्त कुमार
डॉ. मंजू रानी
श्री कुलदीप सिंह
डॉ. विक्की तोमर
श्री हरीश राम
डॉ. शिल्पी पाल
डॉ. अलका हरित
डॉ. मो. इकराम
डॉ. अश्विनी शर्मा
डॉ. नरेन्द्र कुमार
डॉ. सुरजीत कौर
डॉ. प्रमोद कुमार
डॉ. प्रियंका सैनी
डॉ. नेहा सिंह
श्रीमती अंजू बरछीवाल

महाविद्यालय परिचय

हर्ष विद्या मन्दिर (पी.जी.) कॉलेज, रायसी, हरिद्वार रायसी रेलवे स्टेशन से दक्षिण दिशा में 1 किमी. तथा लक्सर रेलवे स्टेशन और बस स्टैण्ड से लक्सर-बालावली मार्ग पर 8 किमी. की दूरी पर स्थित है। महाविद्यालय के पास अपना विशाल और आकर्षक भवन है जो पूरी तरह से विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप बनाया गया है। विश्वविद्यालय और शासन के सहयोग से 2005 में विज्ञान संकाय (PCM, CBZ) और 2007 में नौ विषयों में नियमित कक्षाएं शुरू करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। 2012-13 में एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित) और एम.ए. (शिक्षाशास्त्र) की मान्यता प्राप्त हुई। इसी वर्ष (2012-13) में महाविद्यालय को NCTE द्वारा B.Ed की मान्यता मिली और उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्धता प्रदान की गई। वर्तमान में B.Ed की सम्बद्धता श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल से है। वर्ष 2012-13 में श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल द्वारा महाविद्यालय को एम.एस.सी. (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान) और एम.ए (हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, चित्रकला, भूगोल) की सम्बद्धता मिली। वर्ष 2019-20 में बी.एस.सी. (गृह विज्ञान), एम.एस.सी. (गृह विज्ञान), बी.कॉम, एम.कॉम और एम.ए. (अर्थशास्त्र) की सम्बद्धता भी प्राप्त हुई।

महाविद्यालय में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगोल, शिक्षाशास्त्र और चित्रकला की समृद्ध प्रयोगशालाएं हैं। सभी प्रयोगशालाएं आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित हैं। महाविद्यालय का पुस्तकालय भी सभी विषयों की पाठ्यक्रमानुसार पुस्तकों से सुसज्जित है। इसके अलावा छात्र-छात्राओं के लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। महाविद्यालय का अनुशासन सर्वोत्तम और अनुकरणीय है। उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम जहां विज्ञ प्रवक्ताओं की साधना एवं अध्यापन निष्ठा का प्रतीक है, वहीं छात्र-छात्राओं को अध्ययन के प्रति प्रेरित कर उनमें सुचरित्रता, पारस्परिक सौजन्यता और उनके बहुमुखी विकास की दिशा में महाविद्यालय निरन्तर प्रयासरत है।

संगोष्ठी का उद्देश्य

भारतीय संस्कृति भारत की एक विरासत है जो समूचे विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। त्याग, सम्मान, संयम, सत्य, अहिंसा तथा अध्यात्म यह सभी हमारी संस्कृति की पहचान रहे हैं। इन्हीं सद्गुणों के कारण हम अपनी संस्कृति पर गर्व कर सकते हैं। भारतीय युवा एक समृद्ध और विस्तृत संस्कृति के भाग हैं फिर भी वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से नहीं जुड़ पा रहे हैं क्योंकि वे वर्तमान में पश्चिमी संस्कृति का अन्धानुकरण करने की राह पर अग्रसर हैं। भौतिक आधुनिकता ने आज के युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत से कोसों दूर कर दिया है। उन्हें पद, प्रतिष्ठा तथा धन कमाने की लालसा ने अन्धा बना दिया है। वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण की चकाचौंध में युवा वर्ग अपनी पुरातन संस्कृति की महान विरासत को भूलता जा रहा है। धीरे-धीरे नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है तथा मानवता कराह रही है। मनुष्य में आपसी सौहार्द, प्रेम तथा भाईचारे की भावना का अभाव दिखाई दे रहा है। युवाओं में भटकाव का एक प्रमुख कारण एकल परिवार भी है। पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे जिनमें दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची आदि सभी लोग संयुक्त रूप से रहते थे तथा बच्चों के मनो-मस्तिष्क में बचपन से ही नैतिक मूल्य तथा संस्कारो का बीजारोपण करते थे। आज एकल परिवारों में बच्चों का बचपन एकाकी बनकर रह गया है जिससे नैतिक मूल्य तथा संस्कारों के बीजों का अभाव परिलक्षित हो रहा है जो की चिन्ता एवं चिन्तन का विषय है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि युवा वर्ग का भारतीय सांस्कृतिक विरासत से दूर होना देश तथा समाज के लिए अहितकर कदम है। हम सभी को युवाओं में सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे तभी हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजकर रख सकेंगे।

संगोष्ठी के उपविषय

- युवाओं के समक्ष चुनौतियां और उनके सम्भावित समाधान
- युवाओं के चरित्र निर्माण में साहित्य की भूमिका
- भारत के सांस्कृतिक निर्माण में साहित्यकारों का योगदान
- नीति निर्माण में संयुक्त अथवा एकल परिवार की भूमिका
- वैश्वीकरण की दौड़ में संस्कृति एवं सभ्यता से अलगाव
- आधुनिक भारतीय युवा एवं पर्यावरणीय चुनौतियां
- भारतीय संस्कृति और युवा वर्ग का दायित्व
- भारतीय युवा : चुनौतियां एवं अवसर
- राष्ट्रीय प्रगति में युवा वर्ग की भूमिका
- युवाओं पर राजनीतिक चरित्रों का प्रभाव
- भारतीय युवा एवं सोशल मीडिया
- भारतीय युवाओं पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव
- आधुनिक भारतीय युवाओं के सांस्कृतिक विरासत से दूरियों के सामाजिक कारण
- युवावस्था : तनाव व चुनौतियों की अवस्था
- युवा कलाकार और समाज
- युवाओं में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्तियां
- देश की समस्याएं और युवा वर्ग
- भारतीय युवाओं को आकर्षित करती लोक सेवाएं
- चुनौतियां एवं सम्भावनाओं के बीच भारतीय युवा कलाकार
- वरिष्ठ नागरिकों के प्रति युवाओं के उत्तरदायित्व
- भारतीय युवा : भावी समृद्धि के संरक्षक
- आज का युवा : परामर्शदाता की भूमिका
- वर्तमान युवा संस्कृति
- युवाओं में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति
- आधुनिक भारतीय युवाओं को सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने में साहित्य, समाज एवं शिक्षा की भूमिका
- भारतीय युवाओं के सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने के उपाय
- युवाओं को भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने की विभिन्न सरकारी योजनाएं
- आधुनिक भारतीय युवा एवं पर्यटन की संभाव्यता
- आधुनिक भारतीय युवा एवं सांस्कृतिक पर्यटन

नोट : अन्य अंतरानुशासनिक विषय भी हो सकते हैं।

शोध पत्र एवं सारांश : नियम/निर्देश

प्रतिभागी अपना शोध पत्र/आलेख (शब्द सीमा 2500-3000) एवं शोध सारांश (शब्द सीमा-300 अधिकतम) सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी में कृतिदेव 010, फॉन्ट माप 12 मे ई-मेल : hvmhindiseminar2024@gmail.com पर **20 सितम्बर, 2024** तक अवश्य प्रेषित कर दें। चयनित शोध पत्रों को सम्पादित पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

शोध सारांश प्रेषित करने की अन्तिम तिथि
20 सितम्बर 2024
शोध पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि
25 सितम्बर, 2024

Join our Whats App Group

पंजीकरण

प्राध्यापक/प्रतिभागी	:	700
शोधार्थी	:	300
छात्र	:	100

शुल्क एवं अन्य विवरण

बैंक : भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : रायसी
खाता नाम : विक्रम सिंह
खाता संख्या : 38975996464
आई.एफ.एस. कोड : SBIN0006410

Scan & Pay Using PhonePe App

Payment Here

कार्यक्रम की रूपरेखा

25 अक्टूबर, 2024

- पंजीकरण एवं जलपान : प्रातः 9:00 से 10:15 बजे तक
- उद्घाटन-सत्र : प्रातः 10:15 से अपराह्न 11:30 बजे तक
- प्रथम तकनीकी सत्र : प्रातः 11:30 बजे से 1:00 तक
- भोजनावकाश : अपराह्न 1:00 से 2:00 बजे तक
- द्वितीय तकनीकी सत्र : 2:00 से सायं 3:30 बजे तक
- चाय : सायं 4:00 बजे

26 अक्टूबर, 2024

- जलपान : प्रातः 9:00 से 10:00 बजे तक
- तृतीय तकनीकी सत्र : प्रातः 10:00 से अपराह्न 11:30 बजे तक
- चतुर्थ तकनीकी सत्र : प्रातः 11:30 बजे से 1:00 तक
- भोजनावकाश : अपराह्न 1:00 से 2:00 बजे तक
- समापन सत्र : अपराह्न 2:00 से 3:00 बजे तक
- सायंकालीन चाय : सायं 3:00 बजे
- प्रमाण पत्र वितरण : सायं 3:20 बजे

Click Here To Register
https://forms.gle/xoG5msFH87gd2bQf8

सम्पर्क सूत्र

डॉ. विक्रम सिंह
विभागाध्यक्ष एवं सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, हर्ष विद्या मन्दिर पी०जी० कॉलेज रायसी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
चलभाष-9412825205, 8393994743, 7895332434